क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19.	फसल कटाई	➢ करेला को तोड़ना उसके 70 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ अच्छे विकसित और कच्चे फल उसमें बीज विकसित होने से पहले वैसे फलों को चुनकर उनके आकार और प्रकार के हिसाब से उन्हें अलग–अलग ग्रेडिंग करते हैं।
20.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 100 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 5 क्विंटल तथा 1 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि
कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - करेला

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B, C के साथ–साथ फासफोरस एवं आयरन प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार के मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ करेला उपजाया जा सकता है। ➢ यह अम्लीय एवं क्षारीय मिट्टी को बर्दाश्त नहीं कर पाता, चिकनी उपजाऊ मिट्टी जहाँ जलजमाव न हो वह काफी अच्छी होती है।
5.	जलवायु	➢ गर्म एवं नम इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन गर्मी के पूर्व फसल के लिए बीजों को जनवरी के अंतिम में और फरवरी में बोया जाता है। करेला के लिए उपयुक्त तापक्रम 20°C – 27°C है लेकिन यह पाला या अत्यधिक ठंढ को बर्दाश्त नहीं करता।
6.	बुआई का समय	➢ गर्मी के लिए जनवरी अंतिम तथा फरवरी माह उपर्युक्त है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 800 ग्राम/एकड़ ➢ 40 ग्राम/0.05 एकड़ और 8 ग्राम/0.01 एकड़
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, 2 फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10.	बुआई	➢ करेला के बीज साधारणतः सीधे खेत में बोए जाते हैं लेकिन आजकल ये पुर्नरोपण किए जाते हैं क्योंकि इससे अच्छा और बेहतर परिणाम होते हैं जब ये नर्सरी में उगाये जाते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ कई तरह के विधि हैं बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियों में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियों में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियों और 6–7 सेमी. ऊँचा ट्रांसप्लांट के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 60 – 90 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल/एकड़ ➢ 5 क्विंटल/0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल/0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ सीधे बीज बोने के पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP - 30 kg, MOP - 40 kg और UREA - 20 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 300 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 200 gm UREA ➢ बीज बोने के 25 दिन के बाद प्रयोग करें – 1 एकड़ में यूरिया – 25 kg तथा 0.01 एकड़ की भूमि में प्रयोग करें 250 gm यूरिया।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। फरवरी के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर और गर्मी के समय 3–4 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाय जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क में आने से सड़ जाते हैं। 1 मीटर ऊँचा पेड़ की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार या बाँस का छज्जा बनाकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17.	कीट एवं बीमारी	➢ करेला की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजो के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करे कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रुकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सकें। ➢ बीजो के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ ट्रासप्लांटेशन के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रासप्लाट के बाद कर सकते है।
19	फसल कटाई	➢ लौकी को तोडना उसके 70 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ अच्छे विकसित और कच्चे फल उसमें बीज विकसित होने से पहले वैसे फलों को चुनकर उनके आकार और प्रकार के हिसाब से उन्हें अलग–अलग ग्रेडिंग करते है।
20	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड में 200 क्विंटल तथा 0.05 एकड और 0.01 एकड में क्रमशः 10 क्विंटल तथा 2 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - लौकी

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन B प्रदान करता है एव आसानी से पचता है।
2	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण मे जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजो के किस्म को किसानो द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) जब हाईब्रिड का प्रयेग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करे ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार मे कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजो की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करे। हमेशा ध्यान रखे कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजो का प्रयोग करे। (अनिवार्य)
4	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार के मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ कद्दू उपजाया जा सकता है। ➢ यह अम्लीय एव क्षारीय मिट्टी को बर्दाश्त नहीं कर पाता, चिकनी उपजाऊ मिट्टी जहाँ जलजमाव न हो यह काफी अच्छी होती है।
5	जलवायु	➢ गर्म एव नम इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन गर्मी के पूर्व फसल के लिए बीजों को जनवरी के अंतिम मे और फरवरी मे बोया जाता है। कद्दू (लौकी) के लिए उपयुक्त तापक्रम 25°C – 30°C है लेकिन यह पाला या अत्यधिक ठंढ को बर्दाश्त नही करता।
6	बुआई का समय	➢ गर्मी से पूर्व के लिए जनवरी अंतिम तथा फरवरी (रबी के समय)
7	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 800 ग्राम / एकड़ ➢ 40 ग्राम / 0.05 एकड और 8 ग्राम / 0.01 एकड़
8	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते है। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते है। इसे 2–3 बार दोहराते है ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जाये।
9	क्यारी तैयार करना	➢ खेतो मे क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास मे सहयोग होता है। ➢ अत्यधिक मात्रा में सिंचाई का तरीका है कि क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, 2 फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10	बुआई	➢ लौकी के बीज साधारणतः सीधे खेत मे बोए जाते है लेकिन आजकल ये ट्रासप्लांट (एक स्थान से दूसरे स्थान) किए जाते है क्योकि इससे अच्छा और बेहतर परिणाम होते हैं जब ये नर्सरी मे उगाये जाते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ कई तरह के विधि है बीजो को नर्सरी मे उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियो मे उगाने का तरीका किसानो द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमे खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजो को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियो मे बोया जाता है, उसके सिंचाई एव खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पतियों और 6–7 सेमी ऊँचा ट्रासप्लाट के लिए ये उत्तम है।
11	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 60 – 90 cm
12	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड़ ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड़ का उपयोग करे। (अनिवार्य)
13	खाद	➢ सीधे बीज बोने के पहले प्रयोग करे। 1 एकड़ मे DAP - 30 kg, MOP - 40 kg और यूरिया– 20 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 300 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 200 gm यूरिया। ➢ बीज बोने के 25 दिन के बाद प्रयोग करे – 1 एकड़ मे यूरिया – 25 kg तथा 0.01 एकड़ की भूमि मे प्रयोग करे 250 gm यूरिया।
14	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा मे नमी मिट्टी मे हमेशा बरकरार रखनी होगी। फरवरी के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर और गर्मी के समय 3–4 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15	अंतर कर्षण क्रियाए	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाय जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क मे आने से सड़ जाते है। 1 मीटर ऊँचा पेड़ की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार या बाँस का छज्जा बनाकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17	कीट एवं बीमारी	➢ लौकी की खेती मे निम्नलिखित कीट एव बीमारी देखे जाते है – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े एव फफूदी इत्यादि।
18	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते है।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधो का सड़ना रूकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रासप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19	फसल कटाई	➢ बैंगन का तोड़ना उसके 70–75 दिनों के बाद से शुरू होता है।
20	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 300 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमश 15 क्विंटल तथा 3 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - बैंगन

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, C के साथ–साथ कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम, आयरन, फास्फोरस, कॉपर, सल्फर, प्रोटिन, कार्बोहाइड्रेड तथा निकोटिन एसिड प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सकें। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार की मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ बैंगन उगाया जा सकता है। लेकिन बलुआही मिट्टी सबसे उपर्युक्त है। इसमें अम्लीयता का मान (5.5 – 6) pH सबसे उपर्युक्त होता है। ➢ चिकनी मिट्टी में जैविकता की मात्रा अधिक होती है। परन्तु इसमें बलुआही मिट्टी सबसे उपर्युक्त है।
5.	जलवायु	➢ गर्म एवं तण्ड इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन खेत में जल जमाव बर्दाश्त नहीं कर सकता। बैंगन के लिए उपयुक्त तापक्रम 15°C – 30°C है लेकिन भारी बारिश से नुकसान होने की संभावना है।
6.	बुआई का समय	➢ रवि फसल के लिए सितम्बर और अक्टुबर तथा बरसात के लिए मई एवं जुन उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 70 ग्राम/एकड़ ➢ 4 ग्राम/0.05 एकड़ और 0.7 ग्राम/0.01 एकड़
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ क्यारी तैयार करने का सही समय है जब बिचड़े 15 दिन पुराने और 5 दिन शेष रह गए हो उसे लगाने में। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए मेड़ का आकार 10–20 फुट लंबा, 2 फीट चौड़ाई और 6 ईंच ऊचाई होना चाहिए। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	बुआई	➢ कई तरह के विधि हैं बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियों में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियों में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी ऊँचा पुर्नरोपण के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 45 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल/एकड़ ➢ 5 क्विंटल/0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल/0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ पुर्नरोपण से पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP-70 kg, MOP-60 kg और UREA 30 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 700 ग्राम DAP, 600 gm MOP और 300 gm UREA ➢ पुर्नरोपण के 40 दिन बाद 1 एकड़ खेत में UREA 50 kg प्रयोग करें। तथा 0.01 एकड़ खेत में 500 ग्राम (अनिवार्य)
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। बरसात के समय हल्का सिंचाई 10–12 दिन के अन्तराल पर और रवि के समय 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाए	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियत्रण पाया जा सकें। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क में आने से सड़ जाते हैं। 1 मीटर ऊँचा पेड़ की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार या बाँस का छज्जा बनाकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17.	कीट एवं बीमारी	➢ बैंगन की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े, मुरझाने वाली, छोटे पत्ते एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजो के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रुकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजो के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने सबधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19.19.19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एव बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19	फसल कटाई	➢ पत्तागोभी का उखाड़ना उसके लगाने के 70–75 दिनों के बाद से शुरू होता है।
20	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 120 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 6 क्विंटल तथा 1.2 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - पत्तागोभी

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B, B2, C के साथ–साथ कैल्शियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, आयरन, सोडियम, पोटाशियम, सल्फर, प्रोटिन, निकोटिन एसिड तथा वसा प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण मे जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजो के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजो का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजो का प्रयोग करें ताकि रोगो से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजो का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ अच्छी तरह से सूखा मिट्टी मे पत्तागोभी का उत्पादन करने की क्षमता होती है। ➢ मिट्टी मे उपर्युक्त पीएच रेज 6.0 – 6.5 होना पत्तागोभी उत्पादन के लिए अच्छा होता है।
5.	जलवायु	➢ ठण्ड का मौसम और उच्च आर्द्रता पत्तागोभी के लिए उपर्युक्त है। पत्तागोभी के लिए औसत तापमान 8°C से 20°C अच्छा होता है
6.	बुआई का समय	➢ अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी महीना उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 70 ग्राम / एकड ➢ 3.5 ग्राम / 0.05 एकड़ और 0.7 ग्राम / 0.01 एकड़
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते है। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जाये।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ क्यारी तैयार करने का सही समय है जब बिचड़े 15 दिन पुराने और 5 दिन शेष रह गए हों उसे लगाने में। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए मेड़ का आकार 10–20 फुट लंबा, 2 फीट चौड़ाई और 6 इंच ऊंचाई होना चाहिए। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	बुआई	➢ कई तरह के विधि है बीजों को नर्सरी मे उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियो मे उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजो को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियो मे बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी ऊँचा पुर्नरोपण के लिए यह उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 45 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड़ ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ पुर्नरोपण से पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP - 35 kg, MOP - 40 kg और UREA 40 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 350 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 400 gm UREA ➢ पुर्नरोपण के 30 दिन बाद 1 एकड़ खेत में UREA 50 kg तथा 0.01 एकड़ खेत में 500 gm UREA प्रयोग करें (अनिवार्य)।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। नवम्बर के समय हल्का सिंचाई 4–5 दिन के अन्तराल पर और दिसम्बर के समय 7–8 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाए	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाया जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
17.	कीट एवं बीमारी	➢ पत्तागोभी की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े, मुरझाने वाली एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधो की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते है।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19.	फसल कटाई	➢ फूलगोभी का उखाड़ना उसके लगाने के 70–80 दिनों के बाद से शुरू होता है।
20.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 100 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 5 क्विंटल तथा 1 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - फूलगोभी

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B1, B2, C के साथ–साथ कार्बोहाइड्रेड, प्रोटिन, निकोटिन एसिड तथा वसा प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ अच्छी तरह से सूखा मिट्टी में फूलगोभी का उत्पादन करने की क्षमता होती है। ➢ मिट्टी मे उपर्युक्त पीएच रेंज 5.5 – 6.6 होना फूलगोभी उत्पादन के लिए अच्छा होता है।
5.	जलवायु	➢ ठण्ड का मौसम और उच्च आर्द्रता फूलगोभी के लिए उपर्युक्त है। फूलगोभी के लिए औसत तापमान 8°C से 20°C अच्छा होता है
6.	बुआई का समय	➢ अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी महीना उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 70 ग्राम / एकड़ ➢ 3.5 ग्राम / 0.05 एकड़ और 0.7 ग्राम / 0.01 एकड़
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ क्यारी तैयार करने का सही समय है जब बिचड़े 15 दिन पुराने और 5 दिन शेष रह गए हो उसे लगाने में। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए मेड़ का आकार 10–20 फुट लंबा, 2 फीट चौड़ाई और 6 ईंच ऊंचाई होना चाहिए। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	बुआई	➢ कई तरह के विधि हैं बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियों में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियों में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी. ऊँचा पुर्नरोपण के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 45 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड़ ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ पुर्नरोपण से पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP - 50 kg, MOP - 35 kg और UREA 30 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 500 ग्राम DAP, 350 gm MOP और 300 gm UREA ➢ पुर्नरोपण के 30 दिन बाद 1 एकड़ खेत में MOP - 15 kg और UREA 50 kg प्रयोग करें। तथा 0.01 एकड़ खेत में 150 ग्राम MOP, 500 gm UREA (अनिवार्य)
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। नवम्बर के समय हल्का सिंचाई 4–5 दिन के अन्तराल पर और दिसम्बर के समय 7–8 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियत्रण पाया जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
17.	कीट एवं बीमारी	➢ फूलगोभी की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े, मुरझाने वाली एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधो की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधो का सड़ना रुकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटो से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ो पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजो के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रासप्लांट के बाद कर सकते है।
19	फसल कटाई	➢ मिर्च का तोड़ना उसके 70 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ मिर्च हरा और लाल दोनों तरीके से बाजार में बेचा जा सकता है।
20.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 200 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमश: 10 क्विंटल तथा 2 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत -मिर्च

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B, C के साथ–साथ कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम, आयरन, फास्फोरस, कॉपर, सल्फर, प्रोटिन, कार्बोहाइड्रेड तथा फैटी एसिड प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजो का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजो का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखे कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजो का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ अच्छी तरह से सूखा मिट्टी में सभी प्रकार की मिर्च का उत्पादन करने की क्षमता होती है। ➢ लेकिन कार्बनिक पदार्थ और कैल्शियम से समृद्ध मिट्टी अधिक उपर्युक्त है। अम्लीय मिट्टी मिर्च उत्पादन के लिए उपर्युक्त नहीं है।
5.	जलवायु	➢ गर्म एवं नम इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन खेत में जल जमाव बर्दाश्त नहीं कर सकता। मिर्च के लिए उपयुक्त तापक्रम 20°C – 30°C है लेकिन भारी बारिश से नुकसान होने की संभावना है।
6.	बुआई का समय	➢ गर्मी फसल के लिए जनवरी और फरवरी तथा बरसात के लिए मई एवं जुन उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 70 ग्राम / एकड़ ➢ 4.0 ग्राम / 0.05 एकड़ और 0.7 ग्राम / 0.01 एकड़
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ क्यारी तैयार करने का सही समय है जब बिचड़े 15 दिन पुराने और 5 दिन शेष रह गए हो उसे लगाने में। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए मेड़ का आकार 10–20 फुट लंबा, 2 फीट चौड़ाई और 6 ईंच ऊंचाई होना चाहिए। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	बुआई	➢ कई तरह के विधि है बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियो में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियो में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी. ऊँचा पुर्नरोपण के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 45 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड़ ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ पुर्नरोपण से पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP - 60 kg, MOP - 50 kg और UREA 30 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 600 ग्राम DAP, 500 gm MOP और 300 gm UREA ➢ पुर्नरोपण के 30 दिन बाद 1 एकड़ खेत में MOP - 30 kg और UREA 50 kg प्रयोग करें। तथा 0.01 एकड़ खेत में 300 ग्राम MOP, 500 gm UREA (अनिवार्य)
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। फरवरी के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर और गर्मी के समय 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाए	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाया जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क में आने से सड़ जाते है। 1 मीटर ऊँचा पेड़ की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार या बाँस का छज्जा बनाकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17.	कीट एवं बीमारी	➢ मिर्च की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते है – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े, मुरझाने वाली, छोटे पत्ते एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधो की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी मे घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
18.	फसल कटाई	➢ ग्वार फल्ली को तोड़ना उसके 55 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ अच्छे विकसित और फल पूरी तरह परिपक्व हो तब सप्ताह में 2 बार तोड़ना चाहिए।
19.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 20 क्विंटल तथा 0.05 एकड और 0.01 एकड में क्रमशः 1 क्विंटल तथा 0.2 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - ग्वार फल्ली

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B, C के साथ–साथ फासफोरस एवं आयरन प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हों तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार के मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ ग्वार फल्ली उपजाया जा सकता है। ➢ यह अम्लीय एवं क्षारीय मिट्टी को बर्दाश्त नहीं कर पाता, चिकनी उपजाऊ मिट्टी जहाँ जलजमाव न हो वह काफी अच्छी होती है।
5.	जलवायु	➢ बरसात एवं ठण्ड इसके लिए काफी उत्तम है बरसात के लिए जून के अंतिम सप्ताह तथा ठण्ड में नवम्बर के प्रथम सप्ताह में बोआई का उपयुक्त समय है। इस फसल के लिए उपर्युक्त तापक्रम $20^{0}C - 27^{0}C$ है।
6.	बुआई का समय	➢ बरसात के लिए जून के अंतिम सप्ताह तथा ठण्ड के लिए नवम्बर के प्रथम सप्ताह उपर्युक्त है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 8 किलो / एकड ➢ 300 ग्राम / 0.05 एकड और 60 ग्राम / 0.01 एकड
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिडकाव और जडों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, 2 फीट चौडा और 8 फीट मोटा। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	बुआई	➢ ग्वार फल्ली के बीज साधारणत: सीधे खेत में बोए जाते हैं।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 30 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ सीधे बीज बोने के पहले प्रयोग करें। 1 एकड में DAP - 30 kg, MOP - 40 kg और UREA - 20 kg तथा 0.01 एकड के भूमि के लिए 300 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 200 gm UREA ➢ बीज बोने के 25 दिन के बाद प्रयोग करें – 1 एकड में यूरिया – 25 kg तथा 0.01 एकड की भूमि में प्रयोग करें 250 gm यूरिया।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। दिसम्बर के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर और बरसात के समय सिंचाई जरूरत के अनुसार करनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोडाई 8 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाय जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	कीट एवं बीमारी	➢ ग्वार फल्ली की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीडे एवं फफूंदी इत्यादि।
17.	पौधो की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं। ➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिडकाव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिडकाव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/ लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONI - 5% SC @ 2ml / लीटर दिन के समय 9 – 10 बजे के बीच छिड़काव करने से उससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ बीज बोने के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए पौधों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
18.	फसल कटाई	➢ भिंडी को तोड़ना उसके 55 दिनों के बाद से शुरु होता है। ➢ अच्छे विकसित और फल पूरी तरह परिपक्व हों तब सप्ताह में 2 बार तोड़ना चाहिए।
19.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 50 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 2.5 क्विंटल तथा 0.5 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - भिंडी

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह प्रोटिन, विटामिन A, विटामिन B, खनिज, कैल्शियम, मैग्नेशियम, सोडियम, कॉपर, फॉस्फोरस, पोटाश और आयरन प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करें वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए। (अनिवार्य) जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसीन स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकारा पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ भिंडी रेतीली मिट्टी और लगभग सभी मिट्टी में उगाया जा सकता है। उपर्युक्त पीएच रेंज 6.0 – 6.8 pH है। गहरी, नाजुक और अच्छी तरह से सूखी मिट्टी सबसे उपयुक्त है और अच्छी तरह से पनपती है।
5.	जलवायु	➢ यह सबसे उपर्युक्त 20°C-30°C में अच्छी तरह से उत्तम मासिक तापमान के तहत पनपती है। यह गर्मी और बरसात दोनों मौसम में उगाया जा सकता है। ठण्ड का मौसम इसके लिए हानिकारक है।
6.	बुआई का समय	➢ गर्मी के लिए फरवरी अंतिम सप्ताह और बरसात के लिए जून का पहला सप्ताह अच्छी मानी जाती है।
7.	बीज दर	➢ 6 किलो / एकड़ – बोआई (गुणवत्ता के बीज) के लिए बीज दर 300 ग्राम / 0.05 एकड़ में एवं 80 ग्राम / 0.01 एकड़ में।
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते है। इसे दो–तीन बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जाएँ।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ भिंडी की खेती में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ अत्यधिक मात्रा में सिंचाई का तरीका है कि क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, दो फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10.	बुआई	➢ भिंडी के बीज साधारणतः सीधे खेत में बोए जाते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीज 24 घंटे के लिए पानी में फुलाते है तथा सीधे बुवाई करते हैं।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 सेमी और पौधे को पौधों के बीच 30 सेमी।
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद – 100 क्विंटल / एकड़
		➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ बीज बोने के पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP - 50 kg, MOP - 30 kg और यूरिया – 20 kg तथा 0.01 एकड़ में भूमि के लिए 500 ग्राम DAP, 300 gm MOP और 200 gm यूरिया। ➢ बीज बोने के 21 दिन के बाद प्रयोग करें। 1 एकड़ में यूरिया – 30 kg तथा 0.01 एकड़ की भूमि में प्रयोग करें 300 ग्राम यूरिया।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। जिसके लिए सिंचाई 7–10 दिनों के अन्तराल में होनी चाहिए। बरसात में सिंचाई की जरूरत कम होती है।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाय जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	कीट एवं बीमारी	➢ भिंडी की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखें जाते हैं फल छेदक, चुसने वाले कीड़े, फफूंदी इत्यादि।
17.	पौधो की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण के बाद निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाय किए जा सकते है। ➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन के बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय कशेरु 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रुकता है।

कीट प्रबंधन / नियंत्रण

1. **सफेद लट** :– फालिडाल डस्ट 2 प्रतिशत या कार्बोरिल 10 प्रतिशत डस्ट 8 से 10 किलो प्रति एकड की दर जुताई पूर्व भुरकाव कर जुताई करें।
2. **तना छेदक** :– तना छेदक इल्ली के नियत्रण हेतु फसल अंकुरण के दो सप्ताह बाद दानेदारफोरेट 10 जी0 (थिमेट 10 ळ) बुआई के 20 से 25 दिन के बाद 6 कि॰ ग्रा॰ प्रति एकड की दर सेया डेमोक्रान 35ईसी / डेल्टामिथ्रिन / क्वीनालफास 25 ई0 सी0 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।
3. कबल कीट:– इस कीट के नियत्रण हेतु आखिरी जुताई के समय क्विनालफॉस डस्ट 1.5 प्रतिशत को 8 किलो प्रति एकड की दर से भुरकाव करना चाहियें।
4. रस चूसक कीडे जैसीड ,एफीड , टिडडा एवं आर्मी वर्म के नियत्रण हेतु ट्रायजोफॉस 40 ई सी या इमिडाक्लोरोपेड या क्लोरोपाइरीफोस 50 ई.सी. की 1.5 से 2.0 मि.ली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
5. **कट वर्म एवं अन्य जड** के नियत्रण हेतु फोरेट 10 जी का 5–6 किलोग्राम एकड के हिसाव से बुआई के समय प्रयोग करें। या क्लोरोपाइरीफोस 50 ई.सी. की 1.5 से 2.0 मि.ली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
6. **गाभ की सुंडी** के प्रभावी नियत्रण हेतू फ्यूराडाइन 3 जी के दानों का प्रयोग 3 कि. ग्रा. एकड के हिसाब से बुआई के 15 दिन बाद करें।या कराटे 35 ई.सी. की 1.5 से 2.0 मि.ली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
7. **प्ररोह मक्खी (शुट फ्लाई)**:– इसके प्रकोप से बचाने के लिए फोरेट 10 जी की 5–6 किलोग्राम एकड की दर से बुवाई के समय प्रयोग करें। इसके फास्फेमिडान 85 ई.सी. कीटनाशी के 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोरोपेड 50 ई.सी. की 1.5 से 2.0 मि.ली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर पौधे उगने के तुरंत पश्चातृ छिडकाव करना चाहिए।
8. **फफोला भृंग (ब्लिस्टर बीटल)** :– इसका प्रकोप होने पर इमिडाक्लोरोपेड या क्लोरोपाइरीफोस 50 ई.सी. की 1.5 से 2.0 मि.ली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।

मक्का की बिमारियों का प्रबंधन

1. **पत्रलांछन** :– पत्तियों पर भूरे के छोटे गोल एवं अण्डाकार धब्बे बनते है जो पीले आभामडल से घिरे रहते है यह बाद में आपस में मिलकर बडे तथा अनियमित आकार के हो जाते है। रोग प्रगट होते ही मैनकोजैब 2.5 ग्राम प्रतिलीटर पानी घोल कर छिडकाव करें।
2. **हरदा** :– पत्तियों एवं तनों पर भूरे एवं काले रंग के धब्बे बनते है। मैनकोजैब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी घोल कर छिडकाव करें।
3. **उकठा** :– फसल की बढवार रूक जाती है और पौधा पीला परने लगता है। कूछ ही दिनों बाद पौधा सूख जाता है। बीजोपचार– कैप्टाफ 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। 3 वर्ष का फसल चक्र अपनाये।
4. **तुलासिता भमूतिया रोग (Downy mildew)** :– इस रोग में पत्तियों पर पीली धारियाँ पड जाती है। पत्तियों के नीचे की सतह पर सफेद रूई के समान फफूँदी दिखाई देती है। यह धब्बे बाद में गहरे अथवा लाल भूरे पड जाते है रोगी पौधों में भुटटे कम बनते हैं या बनते ही इस रोग की रोकथाम हेतु जिक मैग्नीज कार्बामेट (जायराम) 2.0–2.5 कि.ग्रा. को 200–250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड की दर से छिडकाव करना चाहिए।
5. **पत्ती धब्बा रोग या झुलसा रोग (Leaf spot/Blight)** :– इस रोग में पत्तियों पर लम्बे तथा कुछ अण्डाकार नाव के आकार के पीले से भूरे रंग के धब्बे पड जाते है बाद में काले हो जाते है और अधिक प्रकोप होने पर पत्तियाँ झुलस कर सूख जाती है। इस रोग की रोकथाम हेतु जिक मैग्नीज कार्बामेट (जायराम) 2.0–2.5 कि.ग्रा. को 200–250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड की दर से छिडकाव करना चाहिए।
5. **तना सडन रोग / स्टाक राट (Stem Rot)** :– यह रोग अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में जहाँ अधिक पानी रूकता है अधिक पाया जाता है। इसमें तने की पोरियों पर जलीय धब्बे दिखाई देते है जो शीघ्र ही सडने लगते है और उनमें से दुर्गन्ध आती है पत्तियाँ पीली पडकर सूख जाती है तथा पौधे पोरी से टूटकर गिर जाते है। तने का निचला भाग सडकर मुलायम हो जाता है जिससे पौधे झुक कर गिर जाते है। इस रोग की रोकथाम हेतु ब्लीचीग पाउडर की 4 किलो ग्राम मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल कर मिट्टी सतह से पूरे पौधे को छिडकाव करें। अथवा 4 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन अथवा 20 ग्राम एग्रीमाइसीन अथवा 40 ग्राम प्लांटोमाइसीन प्रति एकड की दर से छिडकाव करें तथा सिचाई के पानी के साथ क्लोरोक्स (8–10 कि.ग्रा. मात्रा प्रति एकड) खेत में डालें। खेत में पानी के उचित निकास की व्यवस्था बनाऐं।

स्मी विधि से मक्का की उपज :–

- इस तरह स्मी विधि से एक एकड जमीन में 35–40 क्विटल उपज प्राप्त की जा सकती है।
- बिहार, भारत का प्रमुख मक्का उत्पादक राज्य है। इसकी खेती हमारे यहाँ रबी एव गरमा सभी मौसम में की जाती है।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

मक्के की जिम्मेदार खेती

मक्का की सघनीकरण विधि (SMI) प्रक्रिया

मक्का की सघनीकरण विधि (SMI) प्रक्रिया :

एक एकड़ खेत के लिए बीज उपचार हेतु आवश्यक सामग्री।

एक एकड़ जमीन के लिए 8 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है इसके उपचार के लिए निम्न सामग्री की आवश्यकता होती है।

- 8 किलो उन्नत किस्म के मक्का का बीज
- 16 लीटर गर्म पानी (600 सुसुम या गुनगुना पानी)
- केंचुआ खाद 4 किलोग्राम
- गुड़ – 500 ग्राम, गौमुत्र – 2 लीटर, नीम काड़ा – 2 लीटर
- ट्राईकोडरमा विरिडी 40 ग्राम
- एजैक्टोवैक्टर 40 ग्राम एवं पी.एस.एम. – 40 ग्राम

जैविक विधि से बीज उपचार

- 8 किलो बीज मे से मिट्टी कंकड़ एवं खराब व रोगग्रस्त बीजों को अलग कर छाँट लें। 16 ली0 पानी एक बर्त्तन में गर्म करें। (60 डिग्री सेंटीग्रेट यानी सुसुम होने तक)। छाँटे हुए बीजों को इस गर्म पानी में डालें। पानी के ऊपर तैर रहे बीजों को छानकर निकाल दें। इस पानी में 4 किलो केंचुआ खाद, 0.5 किला गुड़ एवं 2 लीटर गौ–मुत्र, नीम काड़ा मिलाकर 6–8 घंटे के लिए छोड़ दें। 6–8 घंटे के बाद इस मिश्रण को एक कपड़े में छान लें जिससे बीज एवं अन्य मिश्रण घोल से अलग हो जाये। बीज एवं अन्य मिश्रण में ट्राईकोडर्मा विरिडी फूफदीनाशक 40 ग्राम, एजैक्टोवैक्टर 40 ग्राम और पी.एस.एम. 40ग्राम को दस–दस मिनट के अन्तर पर मिलाकर 5 घंटे के लिए अंकुरित होने के लिए गीले जूट के बोरे में बाधकर छोड़ दें। उसके बाद अंकुरित (मुँह खुला) बीज को बोने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इस तरह बीज उपचार बीज के बढ़ने की शक्ति को बढ़ाता है और वे तेजी से बढ़ते है इसे प्राईमिग (Priming) भी कहते हैं।

मुख्य खेत की तैयारी :–

- खेत की तैयारी समान्य मक्का की तरह ही करते है। 50 क्विंटल गोबर खाद या केंचुआ खाद 20 क्विंटल के साथ 1 किलो ट्राईकोडर्मा विरिडी (फफून्दीनाशक) 1 किलो एजैक्टोवेक्टर (नाइट्रोजन स्थरीकरण सूक्ष्मजीवी) तथा 1 किलो पी.एस.एम.(फॉसफेट घोलक सूक्ष्मजीवी) तथा 2 किलो मैटारीजियम एनीसोप्लाइ (कीटनाशक)प्रति एकड़ (ट्राईकोडर्मा विरिडी एजेटोवेक्टर तथा पी.एस.एम. मैटारीजियम एनीसोप्लाइ को गोबर खाद या केंचुआ खाद में मिला कर 5 दिन रखने के बाद खेत में डालते है) में प्रयोग करना चाहिए। कम्पोस्ट खाद की उचित मात्रा के बिना सिर्फ रासायनिक खाद का प्रयोग करते रहने से खेत की उपज क्षमता घटती जाती है।
- अंतिम जुताई से पहले 40–50 किलो डी0ए0पी0 (अपने क्षेत्रानुसार) और 25 किलो पोटाश खाद प्रति एकड़ और 5 किलो सूक्ष्म पोषक तत्व मिश्रण में छीटकर अच्छी तरह हल से मिट्टी में मिला दें।
- अधिक कीड़े लगते हों तो बचाव के लिए फुराडन 3जी 5–6 किलो अथवा नीम की खल्ली 50–60 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से आखरी जुताई के समय प्रयोग करें।

रमी विधि से मक्का की बुआई :–

- बुआई के समय खेत में अंकुरण के लिए पर्याप्त नमी होना चाहिये। क्योंकि अंकुरित (मुँह खुला) बीज लगाए जा रहे है। अगर पर्याप्त नमी नही होगी तो अकुर सुख जायेगा। इसी लिए बुआई के पहले एक बार पलेवा (जुताई से पहले सिचाई) चाहिए।
- लाइन से लाइन 22–24और पौधे से पौधे की दुरी 8 ईंच ही रखी जाती है । लाइन से लाइन और पौधे से पौधे की दुरी को रखने के लिए लकड़ी / रस्सी मार्कर के सहारे पतले कुदाल / खुरपी से 22–24 ईंच पर मार्क कर मक्का के 1–1 बीज को कतार में 8 ईंच की दुरी पर 1 से 1) इंच की गहराई पर पूरब से पश्चिम की दिशा में बोयें ।
- एक सप्ताह के बाद जिस जगह बीज का अकुरण नही हो उस जगह नया बीज लगा दें।

खेतों की देखभाल बोआई के 10 दिनों पर :–

- बुआई के 10 से 12 दिनो के बाद एक सिचाई देना जरूरी है क्योकि इसके बाद से पौधो में नई जड़े आनी शुरू होती है। अगर जमीन में नमी न हो तो पौधा नई जड़े नही बनाएगा और बढ़वार रूक जाएगी। पोषक तत्वों की कमी पौधों पर दिखाई देने लगती है (जैसे पौधों की पत्तियाँ बैगनी रंग की हो जाती है जो सिचाई देने के बाद सही हो जाती है)

खेती की देखभाल बुआई के 40 दिनों पर :–

- खेतों की देखभाल बुआई के 28–30 दिनों के बाद से पौधे में तेजी से बढ़वार होती है। वीडर से मिट्टी को ढीला करें एवं खरपतवार को निकाल दे। इससे मिट्टी ढ़ीला होगी, जड़ो की हवा मिलेगी और पौधे तेजी से बढ़ेगे। इससे मिट्टी ढ़ीला होगी, जड़ो की हवा मिलेगी और पौधे तेजी से बढ़ेगे।

खेतों की देखभाल बुआई के 40 दिनों पर :–

- मक्का की फसल में अगली सिचाई 40–42 दिनों के बाद 25–30 किलो डी0ए0पी0 और 25–30 किलो पोटाश खाद और 45–50 किलो यूरिया (अपने क्षेत्रानुसार) प्रति एकड और केंचुआ खाद 2 क्विंटल के साथ 1 किलो ट्राईकोडर्मा विरिडी 1 किलो एजेटोवेक्टर तथा 1 किलो पी.एस.एम.(फॉसफेट घोलक सूक्ष्मजीवी) प्रति एकड़ (ट्राईकोडर्मा विरिडी, एजैक्टोवेक्टर तथा पी.एस.एम को केंचुआ खाद में मिला कर 5 दिन रखने के बाद खेत में डालते है) जमीन के हिसाब से पौधे की जडो से 2 इंच दूर खाद डाले फिर कुदाल या फावड़ा की सहायता से मिटटी चढ़ा दें। मिटटी चढ़ाने के 7 से 8 दिनों बाद सिचाई देते है। इस समय पौधों में गाँठ बनना शुरू होती है इन गाँठों में कार्बोहाईड्रेट (भोजन) इकट्ठा होता है जो दाना बनते समय यह भोजन स्थानांतरित होता रहता है इस समय पौधों को अधिक नमी की आवश्यकता होती है।
- कीड़े से बचाव के लिए नीम का तेल / ब्यभेरिया ब्यसियाना 2 किलो / एकड़ का छिडकाव करें या इमेडाक्लोरोपिड / क्लोरोपाइरीफॉस 2 एम.एल. प्रति लिटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

खेतों की देखभाल बुआई के 75 दिन पर :–

- मक्का की फसल में अगली सिचाई 75 एवं 80 वें दिन पर करें।

खेतों की देखभाल बुआई के 100वें दिन पर :–

- मक्का की फसल में अगली सिचाई 100वें दिन पर करें। सिचाई के बाद जब खेत में चलने लायक नमी हो तब शाम के समय 60–80 किलो युरिया (अपने क्षेत्रानुसार) प्रति एकड़ जमीन के हिसाब से छिड़काव करें या 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें। ध्यान देने की बात यह है कि माझर या टेसलिग निकलने वाली अवस्था और 4 से 7 दिन बाद शिल्क अवस्था आती है पर पानी की कमी नही होनी चाहिए नही तो 20–30 प्रतिशत उपज कम हो जाती है। मक्के की फसल में अगली सिचाई 120वें दिन पर करें। ध्यान देने की बात यह है कि भुटटों में दाना बनते समय (ग्रेन फारमेन स्टेज) में पानी की कमी नही होनी चाहिए नही तो 25–30 प्रतिशत उपज कम हो जाती है।

खेतों की देखभाल बुआई के 120वें दिन पर :–

- मक्का की फसल में अगली सिचाई 140वें दिन पर करें। ध्यान देने की बात यह है कि दानों में दूध बनते समय (मिल्किंग स्टेज) में पानी की कमी नही होनी चाहिए नही तो 30–40 प्रतिशत उपज कम हो जाती है।

खेतों की देखभाल बुआई के 140वें दिन पर :–

- मक्के के 160 से 165 वें दिन पर मक्का परिपक्व हो जाती है उसकी कटाई कर लेनी चाहिये। पौधों के अवशेष को खेत में जुताई करके मिट्टी में दवा देना चाहिये। अवशेष को खेत में नही जलाना चाहिये।

नोट : सिचाई की संख्या मिट्टी के प्रकार, तापमानव खेत में पौधों की संघनता पर निर्भर करती है।

8. जींक की कमी :–

- यह पौधे का आवश्यक पोषक है।
- इसके कमी से पत्ते छोटे एवं डंठल पतला और हल्का हो जाते हैं।
- इसकी कमी से पौधे की उपजता में ह्रास होता है।

9. बोरोन की कमी (Boron)

- यह जड़ के विकास को रोकता है।
- पत्ते जल्द टुट जाते हैं।
- फसल के फल फटने लगते हैं।

10. पोटैशियम का फसल में योगदान :–

- यह प्रकाश संश्लेषण को बढ़ाता है।
- यह तेज़ी से विकास की गति देता है।
- यह प्रोटीन के उत्पादन में सहयोग देता है।
- यह N उर्वरक को सुधारता है।
- यह जल की समुचित उपयोग का बढ़ाता है।

पोटाश की कमी से फसल पर प्रभाव

पोटाश के साथ फसल

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

सब्जियों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण

सब्जियों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण

1. नाईट्रोजन की कमी :–

- यह फसल के समुचित पैदावार में अहम भूमिका निभाती है।
- यह एक आवश्यक तत्व है फसल के समुचित पैदावार व अच्छी खेती के लिए इसकी कमी के कारण पत्ते पीले व छोटे हो जाते हैं।

2. फास्फोरस की कमी :–

- यह जड़ रचना तथा फल के विकास में सहायक है।
- यह फल के पकने उसके रंग व मिठास में सहायक है।
- इसकी कमी से विकास धीमा हो जाता है।

3. पोटेशियम की कमी :–

- पोटेशियम इसमें पानी की मात्रा को नियंत्रित करता है।
- यह स्टार्च व सुगर को प्रभावित करता है।
- फल के रंग को सुधारता है।
- यह फल को पकाता है एवं लम्बे समय तक सुरक्षित रखता है।
- इसकी कमी से पौधे में उसकी गुणवता खत्म हो जाती है व रूप बिगड़ने लगता है।
- पत्ते पीले और भूरे हो जाते हैं।

4. आयरन की कमी :–

- पौधे में इन्जाइम की गतिविधि में आयरन की अहम भूमिका होती है।
- इसकी कमी से पत्तियां पीले पड़ जाते हैं एवं वे झडने लगते हैं।
- अत्याधिक कमी में पतियाँ पूर्णतः सफेद एवं जले का निशान हो जाता है।
- आयरन की कमी के प्रभाव से हमेशा पत्तों पर ही नहीं होती इसलिए उसके दृश्यात्मक संकेत भी काफी महत्वपूर्ण हैं।

5. मैगनिश्यिम की कमी :–

- मैगनिश्यम पौधे के पत्तों में हरे रंग का मुख्य उत्पादक है ताकि पतियाँ अच्छी तरह से काम करे सके।
- इसकी कमी से पत्तियों के रंगों में पीलापन आ जाता है जो कि जले हुए धब्बे में परिवर्तित हो जाता है।
- शुरूवात नीचे के पत्तों से होता है और फिर ऊपर के पत्ते क्षतिग्रस्त होते हैं और फिर पूरा फसल बरबाद हो जाता है।

6. कैल्सियम की कमी :–

- कैल्सियम काफी महत्वपूर्ण है।
- कैल्सियम सम्पूर्ण सेल को प्रोटीन प्रदान करता है।
- यह मिट्टी से पानी के द्वारा पौधों को प्राप्त होता है एवं पत्तों एवं फलो को जाता है।
- इसकी कमी से फल पकने पर उनके भुरेपन से काला धब्बे आ जाते हैं।

7. मैग्नीज की कमी :–

- मैग्नीज महत्वपूर्ण पोषक तत्व है।
- यह प्रकाश संश्लेशण की क्रिया में भी उपयोगी है।
- इसकी कमी से पत्ते पीले एवं भुरे रंग के हो जाते हैं।
- इसकी कमी से पौधा नष्ट होने लगता है।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रुकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
18	फसल कटाई	➢ फसल की कोड़ाई तभी करें जब उसमें अच्छी तरह गाँठ अर्थात् प्याज के छिलके आ गए हों तथा उनका आकार पूर्णतः विकसित लगे।
19	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 100 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 5 क्विंटल तथा 1 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - प्याज

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन C के साथ–साथ कैल्शियम, आयरन, फास्फोरस, प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ बलुआही मिट्टी में सभी प्रकार की प्याज का उत्पादन करने की क्षमता होती है। लेकिन कार्बनिक पदार्थ और कैल्शियम से समृद्ध मिट्टी अधिक उपर्युक्त है। अम्लीय मिट्टी प्याज उत्पादन के लिए उपर्युक्त नहीं है।
5.	जलवायु	➢ गर्म एवं नम इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन खेत में जल जमाव बर्दाश्त नहीं कर सकता। प्याज के लिए उपयुक्त तापक्रम 12°C – 22°C है लेकिन भारी बारिश से नुकसान होने की संभावना है।
6.	बुआई का समय	➢ रवि फसल के लिए अक्टुबर और नवम्बर माह उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 4 किलो / एकड़ ➢ 200 ग्राम / 0.05 एकड़ और 40 ग्राम / 0.01 एकड
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ क्यारी तैयार करने का सही समय है जब बिचड़े 25 दिन पुराने और 5 दिन शेष रह गए हो उसे लगाने में। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए मेड़ का आकार 10–20 फुट लंबा, 2 फीट चौड़ाई और 6 इंच ऊंचाई होना चाहिए। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	बुआई	➢ कई तरह के विधि हैं बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियों में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियों में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी ऊँचा पुर्नरोपण के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 20 – 25 cm और पौधे से पौधे के बीच 8 – 10 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड़ ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड़ और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड़ का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ पुर्नरोपण से पहले प्रयोग करें। 1 एकड़ में DAP - 50 kg, MOP - 40 kg और UREA 30 kg तथा 0.01 एकड़ के भूमि के लिए 500 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 300 gm UREA ➢ पुर्नरोपण के 30 दिन बाद 1 एकड़ खेत में MOP - 35 kg और UREA 50 kg प्रयोग करें। तथा 0.01 एकड़ खेत में 500 ग्राम MOP, 350 gm UREA (अनिवार्य)
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। नवम्बर के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर और दिसम्बर के समय 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई होनी चाहिए।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियत्रण पाया जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	कीट एवं बीमारी	➢ प्याज की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – घुसने वाले कीड़े, मुरझाने वाली बीमारी एवं फफूंदी इत्यादि।
17.	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते है।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करे BIOSONIC @ 1.5 ml/ लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONI - 5% SC @ 2ml / लीटर दिन के समय 9 – 10 बजे के बीच छिड़काव करने से उससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ बीज बोने के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों मे छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए पौधो पर 19:19:19 (पानी मे घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजो के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियो से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लाट के बाद कर सकते है।
18	फसल कटाई	➢ मटर को तोड़ना उसके 55 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ अच्छे विकसित और फल पूरी तरह परिपक्व हो तब फसल काटा जाता है।
19	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 30 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ मे क्रमश: 1.5 क्विंटल तथा 0.3 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - मटर

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह प्रोटिन, विटामिन A, विटामिन B, खनिज, कैल्शियम और आयरन प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए। (अनिवार्य) जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसीन स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकारा पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ मटर रेतीली मिट्टी और लगभग सभी मिट्टी में उगाया जा सकता है। उपर्युक्त पीएच रेंज 7.0 – 7.5 pH है। गहरी, नाजुक और अच्छी तरह से सूखी मिट्टी सबसे उपयुक्त है और अच्छी तरह से पनपती है।
5.	जलवायु	➢ यह सबसे उपर्युक्त 10°C-18°C में अच्छी तरह से उत्तम मासिक तापमान के तहत पनपती है। यह एक ठंडे मौसम की फसल है और प्रारंभिक चरण में यह अच्छी तरह से ठंढ विरोध कर सकते हैं। उच्च तापमान और गरम मौसम इसके लिए हानिकारक है।
6.	बुआई का समय	➢ अक्टूबर और नवम्बर (रबी सीजन)
7.	बीज दर	➢ 30 किलो / एकड – बोवाई (गुणवत्ता के बीज) के लिए बीज दर 1.5 किलो / 0.05 एकड और 300 ग्राम / 0.01 एकड।
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे दो–तीन बार दोहराते है ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जाएँ।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ मटर की खेती में क्यारियाँ बनाने, मेड़ बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ अत्यधिक मात्रा में सिंचाई का तरीका है कि क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, दो फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10.	बुआई	➢ मटर के बीज साधारणतः सीधे खेत में बोए जाते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीज 24 घंटे के लिए पानी में फुलाते हैं और वे अकुरित होने तक गीले कपड़े में रखा जाता है और छाया में सूखने के बाद वे सीधे बुवाई करते है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 30 सेमी और पौधे को पौधों के बीच 10 सेमी।
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद – 100 क्विंटल / एकड ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड और ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ बीज बोने के पहले प्रयोग करें। 1 एकड में DAP - 50 kg, MOP - 30 kg और यूरिया – 20 kg तथा 0.01 एकड में भूमि के लिए 500 ग्राम DAP, 300 gm MOP और 200 gm यूरिया। ➢ बीज बोने के 21 दिन के बाद प्रयोग करें। 1 एकड में यूरिया – 30 kg तथा 0.01 एकड की भूमि में प्रयोग करें 300 ग्राम यूरिया।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। नवम्बर के समय सिंचाई 7–10 दिन के अन्तराल पर लगातार करें। लगातार सिंचाई मिट्टी व मौसम की स्थिति पर निर्भर करता है। जनवरी में 12–14 दिनों के अन्तराल पर लगातार सिंचाई करें।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियत्रण पाय जा सकें। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	कीट एवं बीमारी	➢ मटर की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते है फल छेदक, चुसने वाले कीडे, फफूंदी इत्यादि।
17.	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अकुरण के बाद निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाय किए जा सकते है। ➢ बीजों के अकुरण के 2–3 दिन के बाद छिडकाव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बुआई के 7 दिन के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/ लीटर या Mancozeb - 75%(wp) @ 3 gm/लीटर पानी में मिलाकर सुबह के समय 9–10 बजे के बीच ताकि रोगों से बचाव हो। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से पत्ते संबधी बीमारी से बचा जा सकता है। ➢ 35, 45 और 55 दिनों के बाद एक बार फिर से BIOSONIC @1.5 ml/लीटर पानी का छिड़काव करें ताकि पत्ते सबधी बीमारी से बचाव हो। गाँठों के जल्दी और अच्छे विकास के लिए 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव करें 10, 14 और 18 दिन के बाद। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव बोने के बाद कर सकते हैं।
17.	फसल कटाई	➢ फसल की कोड़ाई तभी करें जब उसमे अच्छी तरह गाँठ अर्थात् आलू के ऊपर छिलके आ गए हो तथा उनका पूर्णत विकसित लगे।
18.	उपज	➢ औसत उपज 1 एकड़ में 100 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमश 5 क्विंटल और 1 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेवार खेती की शुरुआत - आलू

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह प्रचुर मात्रा मे विटामिन C, B6, पोटाशियम, मैग्नीज और मिनरल प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण मे जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानो द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ अगर नये बीज खरीदे जा रहे हो तो कम से कम उसमे 70% अंकुरण हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों के उपचार	➢ आलू के बीजो मे अधिकतर बीज संबधी एवं भूआ लगने की होती है जिसके कारण उसके गाठो का विकास नही होता है। इसलिए उसे भुआ से बचाने के लिए फंगिसाइड मे आधा घंटा डुबाया जाता है। फिर उसे छाया मे आधा घटा सुखाया जाता है ताकि अच्छा परिणाम हो। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ हल्की मिट्टी आलू की जड़ो के विकास में बेहतर योगदान देती है और चिकनी मिट्टी जिसमे पानी का निकास अच्छा नही होता है। यह आलू की जड़ों के लिए सही नही है। ➢ मिट्टी को भुरभुरी बनाने के लिए 4–5 बार गहरा जुताई किया जाता है ताकि अच्छा परिणाम हो। (अनिवार्य)
5.	जलवायु	➢ आलू के विकास के लिए ठढा और नमी सहायक है। रबी के समय मे आलू कि बिहन (अकुरित आलू) को नवम्बर महीने मे बोया जाता है। औसत तापक्रम 20°C – 21°C लगातार 3 महीने तक रहने से अच्छी पैदावार होती है।
6.	बुआई का समय	➢ अक्टूबर और नवम्बर (रबी मौसम)
7.	बीज दर	➢ लोकल किस्म – 800किलो / एकड ➢ 40 किलो / 0.05 एकड और ➢ 8 किलो / 0.01 एकड़
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ आलू की खेती मे क्यारियाँ बनाने, मेड बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास, सिंचाई, छिड़काव और जड़ो के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास मे भी सहयोग होता है। ➢ अत्यधिक मात्रा मे सिंचाई का तरीका है कि क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, 2 फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
10.	खाली स्थान या दूरी	➢ एक लाइन से लाइन 45 सेमी और पौधे को पौधों के बीच 20 सेमी.
11.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल / एकड ➢ 5 क्विंटल / 0.05 एकड ➢ 1 क्विंटल / 0.01 एकड प्रयोग करना चाहिए। (अनिवार्य)
12.	रासायनिक खाद	➢ 1 एकड़ खेत मे बीजों को लगाने के पहले मे DAP - 50 kg, MOP - 40 kg और यूरिया– 20 kg प्रयोग करने चाहिए। यहाँ 0.01 एकड़ खेत मे प्रयोग करने चाहिए। 500 gm DAP, 400 gm MOP और 200 gm यूरिया। ➢ बोने के 25–30 दिन के बाद 1 एकड़ मे यूरिया 40 kg प्रयोग करना चाहिए। यहाँ 0.01 एकड खेत में 400 gm यूरिया प्रयोग करना चाहिए। ➢ बोने के 45 दिनों के बाद अतिम खुराक खाद 1 एकड़ मे यूरिया – 40 kg और MOP - 40 kg प्रयोग करना चाहिए तथा 0.01 एकड़ खेत मे 400 gm यूरिया और 400 gm MOP प्रयोग करे (अनिवार्य)
13.	सिंचाई	➢ मिट्टी मे अत्यधिक मात्रा मे नमी हमेशा बनाए रखें। ठंढ के समय 7–8 दिन के अन्तराल पर हल्का सिंचाई करे।
14.	अंतर कर्षण क्रियाएँ	➢ मिट्टी मे हवा के समुचित व्यवस्था के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाया ज सके। ➢ पहला 15 दिन पर, दूसरा 30 दिन पर, तीसरा 45 दिन के बाद आलू के जड़ों के किनारे पर खुदाई करना चाहिए। (अनिवार्य)
15.	कीट एवं बीमारी	➢ आलू की खेती मे निम्नलिखित कीट एवं रोग पाये जाते हैं जैसे पत्तियों को पाला मारना एवं चूसनेवाला कीट लग जाना।
16.	पौधों की सुरक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से बीहन या गाँठों के रोपने तक निम्नलिखित सुरक्षात्मक उपाय करने चाहिए – ➢ बीहन को रोपने के बाद जब बीज अकुरित होते है उसके 2–3 दिन के बाद छिड़काव करें SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर सुबह 9–10 के बीच मे ताकि भुआ लगने की बीमारी से बचाव हो।

- प्रत्येक दिन शाम के समय 20 Ltr. पानी वाले झरनी से पटवन करें। (बारिस के समय मिट्टी की आर्द्रता के अनुसार पानी देना चाहिए)
- सब्जियों के बीज कम से कम 3–9 दिन में अंकुरित हो जाते हैं। बीज के अंकुरित होते ही उसके ऊपर से पुआल को हटा लीजिए व संपूर्ण क्यारियों को नर्सरी जाली से 20 से 25 दिन तक ढ़ँक दें ताकि कई तरह के कीटों से उसकी रक्षा हो सके। (जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।)
- क्यारियों को पॉलथीन या बांस के जाली से 3–4 फीट जमीन से ऊँचा कर ढ़ँके ताकि अत्याधिक बारिश के पानी से बचाव हो।
- बीजों के अंकुरण के दो दिन के अन्दर उसे Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% 20 gm. प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर प्रत्येक क्यारि पर छिड़काव करें ताकि बीचड़ो की जड सड़ने वाली बिमारियों से रक्षा हो।
- अत्यधिक सिंचाई से गलने की समस्या हो जाती है (जब जरूरत हो तभी सिंचाई करें) जबतक बीचड़े पौधे के रूप में तैयार न हो जाय नर्सरी जाली के ऊपर से ही पानी डाले।
- ठीक एक दिन पुर्नरोपण से पहले नर्सरी में JYHO (जैविक कीटनाशक) @ 1.5 ml. प्रति लीटर पानी अथवा Imidacloprid - 1 ml प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन द्वारा छिड़काव करें ताकि फफूंदीनाशक और कीटाणुओं से बचाव हो सके।
- बीचड़ों के अंकुरण के बाद पौधों को 20–25 दिन के भीतर खेतों में लगा देना चाहिए ताकि उसका सम्पूर्ण विकास हो।

1 एकड़ नर्सरी पर कुल लागत का विवरण :–

- बीज – 60 ग्राम (1800 रुपये), केंचुआ खाद – 50 किलो (300 रुपये), नर्सरी जाली (500 रुपये), कीटनाशक (100 रुपये), धान का पुआल – 50 किलो (200 रुपये), झरनी – 20 लीटर (100 रुपये)। **कुल लागत – 3000 रुपये।**

खर्च प्रति बीचड़ा :–

- 1 पैकेट (10 ग्राम) सब्जी के बीज (टमाटर, गोभी, मिर्च, बैंगन इत्यादि) में लगभग 2000 – 2700 बीज होते हैं। यदि 80 प्रतिशत अंकुरण हो तो लगभग 12000 बीचड़े तैयार हो होते हैं। अगर प्रति बीचड़ खर्च निकाला जाय तो 25 पैसे खर्च पड़ेगा। इसलिए उठी हुई क्यारि नर्सरी में स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीचड़ा उगाना उचित है।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

सब्जियों की नर्सरी तैयार करने का तरीका

नर्सरी की तैयारी :–

- कई तरह के विधि किसानों द्वारा प्रयोग में लाये जाते हैं लेकिन "उठी हुई क्यारियों" में नर्सरी उगाने का तरीका ज्यादातर किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। नर्सरी के तैयार क्यारियों में बीजों को उठी हुई क्यारियों में बोया जाता है और उसकी देखभाल, सिंचाई, खरपतवार की छंटाई अच्छी तरह होनी चाहिए ताकि स्वस्थ बिचड़े हो सकें। बीज रोपन के तीन–चार सप्ताह तथा तीन स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी. ऊँचा पुर्नरोपण के लिए उत्तम है।

क्यारियों के आकार :–

- क्यारियाँ 90 Cm. (3 ft.) चौड़ा, 30 Cm. (1 ft.) ऊँचा तथा 600 Cm. (20 ft.) लम्बा उपयुक्त है। 1 एकड जमीन में उगाने के लिए इस तरह के 4 क्यारियों की जरूरत होगी। एक क्यारि में 15 gm. बीज होना चाहिए।

नर्सरी की विधि :–

- खेत जोतने से पहले उसे साफ करना होगा। मिट्टी से ढेले व खूंटी हटाएं। तब उसे क्यारि बनाने के पहले 2 बार हल से जोते
- बीज बोने के लिए 5–6 क्यारि तैयार करें जिसका आकार (3 ft. × 20 ft. × 1 ft.) हो

  क्यारियों के उपरी सतह पर नीम खली का पाउडर 100 gm. अथवा Furadan-3G 15 gm. का प्रयोग करें ताकि उसे दीमक एवं कीटों से सुरक्षित किया जा सके।
- उसमें अच्छी तरह गोबर खाद या केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट) 8-10 Kg. प्रति क्यारि के हिसाब से क्यारियों के बीच में डालें।
- इसके बाद गोबर खाद या केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट) को क्यारि के ऊपरी सतह पर बराबर फैलाए। उसके बाद क्यारि में Bavistin 15-20 gm. 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। बीज बोने के 30 मिनट पहले Bavistin छिडकाव करें ताकि मिट्टी सूख जाये। इस तरह क्यारि की ऊपरी सतह कवक संक्रमण से सुरक्षित होगा।
- बीज बोने के पहले क्यारियों पर अपने हाथ के बीच की अंगुली या लकड़ी के छड़ी से 4 Cm. की दूरी पर (लाइन से लाइन) 1 cm. गडढा बनाएं। तब 2 cm. अलग–अलग दूरी पर बीज बोए ताकि उसका अच्छी तरह से विकास हो सके।
- बीज बोने के बाद प्रत्येक क्यारि पर केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट) 4 Kg प्रत्येक क्यारि पर डाले ताकि पानी पटाने के दौरान बीज अपने लाईन से बाहर न आ जाए।
- प्रत्येक क्यारि पर 5 cm. की ऊँचाई तक पुआल डालें (10 Kg प्रति क्यारी) ताकि सभी बीज समान रूप से अंकुरित हों।

प्रक्रिया – 1

प्रक्रिया – 2

प्रक्रिया – 3

प्रक्रिया – 4

प्रक्रिया – 5

प्रक्रिया – 6

प्रक्रिया – 7

प्रक्रिया – 8

प्रक्रिया – 9

प्रक्रिया – 10

प्रक्रिया – 11

प्रक्रिया – 12

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19.	फसल कटाई	➢ झिंगी को तोड़ना उसके 70 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ अच्छे विकसित और कच्चे फल उसमें बीज विकसित होने से पहले वैसे फलों को चुनकर उनके आकार और प्रकार के हिसाब से उन्हें अलग–अलग ग्रेडिंग करते हैं।
20.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 100 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 5 क्विंटल तथा 1 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - झिंगी

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B, C के साथ–साथ फासफोरस एवं आयरन प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयेग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकार पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार के मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ झिंगी उपजाया जा सकता है। ➢ यह अम्लीय एवं क्षारीय मिट्टी को बर्दाश्त नहीं कर पाता, चिकनी उपजाऊ मिट्टी जहाँ जलजमाव न हो वह काफी अच्छी होती है।
5.	जलवायु	➢ गर्मी एवं बरसात इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन गर्मी के लिए फसल के बीजों को जनवरी के अंतिम में और बरसात में जून के अंतिम सप्ताह बोआई के उपयुक्त समय है। इस फसल के लिए उपर्युक्त तापक्रम 20°C – 30°C है।
6.	बुआई का समय	➢ गर्मी के लिए जनवरी के अंतिम सप्ताह और बरसात के लिए जून का अंतिम सप्ताह उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 600 ग्राम/एकड ➢ 30 ग्राम/0.05 एकड और 6 ग्राम/0.01 एकड
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ नाली में पानी लगाने के लिए क्यारियों 10–20 फीट लम्बी हो, 2 फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10.	बुआई	➢ झिंगी के बीज साधारणत: सीधे खेत में बोए जाते हैं लेकिन आजकल ये पुर्नरोपण किए जाते हैं क्योंकि इससे अच्छा और बेहतर परिणाम होते हैं जब ये नर्सरी में उगाये जाते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ कई तरह के विधि हैं बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियों में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियों में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी. ऊँचा ट्रांसप्लांट के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 60 – 90 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल/एकड ➢ 5 क्विंटल/0.05 एकड और ➢ 1 क्विंटल/0.01 एकड का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ सीधे बीज बोने के पहले प्रयोग करें। 1 एकड में DAP - 30 kg, MOP - 40 kg और UREA - 20 kg तथा 0.01 एकड के भूमि के लिए 300 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 200 gm UREA ➢ बीज बोने के 25 दिन के बाद प्रयोग करें – 1 एकड में यूरिया – 25 kg तथा 0.01 एकड की भूमि में प्रयोग करें 250 gm यूरिया।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। फरवरी के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर तथा बरसात में सिंचाई की जरूरत कम होती है।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाय जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क में आने से सड़ जाते हैं। 2 मीटर ऊँचा पेड़ की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार या बाँस का छज्जा बनाकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17.	कीट एवं बीमारी	➢ झिंगी की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीड़े एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ बीजों के अंकुरण के 2–3 दिन बाद छिड़काव करें कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है। ➢ 7 दिन के अंकुरण के बाद छिड़काव करें BIOSONIC @ 1.5 ml/लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अंकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अंकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ पुर्नरोपण के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एवं बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19.	फसल कटाई	➢ तोरई को तोड़ना उसके 70 दिनों के बाद से शुरू होता है। ➢ अच्छे विकसित और कच्चे फल उसमें बीज विकसित होने से पहले वैसे फलों को चुनकर उनके आकार और प्रकार के हिसाब से उन्हें अलग–अलग ग्रेडिंग करते हैं।
20.	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 100 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 5 क्विंटल तथा 1 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - तोरई

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ यह विटामिन A, B, C के साथ–साथ फासफोरस एवं आयरन प्रदान करता है।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण में जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजों के किस्म को किसानों द्वारा चयन करना चाहिए (अनिवार्य) ➢ जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नये बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो। (अनिवार्य)
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगाणुमुक्त बीजों का प्रयोग करें ताकि रोगों से छुटकारा पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कंपनियों के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करें। हमेशा ध्यान रखें कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजों का प्रयोग करें। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार के मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ तोरई उपजाया जा सकता है। ➢ यह अम्लीय एवं क्षारीय मिट्टी को बर्दाश्त नहीं कर पाता, चिकनी उपजाऊ मिट्टी जहाँ जलजमाव न हो वह काफी अच्छी होती है।
5.	जलवायु	➢ गर्मी एवं बरसात इसके लिए काफी उत्तम है लेकिन गर्मी के लिए फसल के बीजों को जनवरी के अंतिम में और बरसात में जून के अंतिम सप्ताह बोआई के उपयुक्त समय है। इस फसल के लिए उपर्युक्त तापक्रम 20°C – 30°C है।
6.	बुआई का समय	➢ गर्मी के लिए जनवरी के अंतिम सप्ताह और बरसात के लिए जून का अंतिम सप्ताह उपर्युक्त समय है।
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म 600 ग्राम/एकड ➢ 30 ग्राम/0.05 एकड और 6 ग्राम/0.01 एकड
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते हैं। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते हैं। इसे 2–3 बार दोहराते हैं ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जायें।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ खेतों में क्यारियाँ बनाने, मेड बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिंचाई, छिड़काव और जड़ों के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास में सहयोग होता है। ➢ नाली मे पानी लगाने के लिए क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, 2 फीट चौड़ा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10.	बुआई	➢ तोरई के बीज साधारणतः सीधे खेत में बोए जाते हैं लेकिन आजकल ये पुर्नरोपण किए जाते हैं क्योंकि इससे अच्छा और बेहतर परिणाम होते हैं जब ये नर्सरी में उगाये जाते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ कई तरह के विधि हैं बीजों को नर्सरी में उगाने के लिए लेकिन उठी हुई क्यारियों में उगाने का तरीका किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। रसोई बगीचा के तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ बीजों को अच्छी तरह से बनाए गए क्यारियों में बोया जाता है, उसके सिंचाई एवं खरपतवार की सफाई इत्यादि की जाती है ताकि बीज अच्छा और स्वस्थ रहे। ➢ बीजारोपण के 3–4 सप्ताह तथा 3 स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी. ऊँचा ट्रांसप्लांट के लिए ये उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	➢ लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 60 – 90 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विंटल/एकड ➢ 5 क्विंटल/0.05 एकड और ➢ 1 क्विंटल/0.01 एकड का उपयोग करें। (अनिवार्य)
13.	खाद	➢ सीधे बीज बोने के पहले प्रयोग करें। 1 एकड में DAP - 30 kg, MOP - 40 kg और UREA - 20 kg तथा 0.01 एकड के भूमि के लिए 300 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 200 gm UREA ➢ बीज बोने के 25 दिन के बाद प्रयोग करे – 1 एकड में यूरिया – 25 kg तथा 0.01 एकड की भूमि में प्रयोग करें 250 gm यूरिया।
14.	सिंचाई	➢ उपयुक्त मात्रा में नमी मिट्टी में हमेशा बरकरार रखनी होगी। फरवरी के समय हल्का सिंचाई 7–8 दिन के अन्तराल पर तथा बरसात में सिंचाई की जरूरत कम होती है।
15.	अंतर कर्षण क्रियाएं	➢ हवा के समुचित आगमन के लिए 3–4 बार कोड़ाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियंत्रण पाय जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन बीज बोने के बाद। (अनिवार्य)
16.	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क में आने से सड जाते हैं। 2 मीटर ऊँचा पेड़ की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार या बाँस का छज्जा बनाकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17.	कीट एवं बीमारी	➢ तोरई की खेती में निम्नलिखित कीट एवं बीमारी देखे जाते हैं – फल छेदक, चुसने वाले कीडे एवं फफूंदी इत्यादि।
18.	पौधों की रक्षा के उपाय	➢ बीज अंकुरण से निम्नलिखित पौधों की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते हैं।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ 7 दिन के अकुरण के बाद छिड़काव करे BIOSONIC @ 1.5 ml/ लीटर या Mancozeb - 75% (wp) @ 3gm/लीटर पानी का सुबह के समय 9–10 am ताकि उसे रोगाणुओं से बचाया जा सके। ➢ 14 दिनों के अकुरण के बाद JYHO @ 1.5 ml/लीटर या Imidacloprid - 1ml/लीटर सुबह के समय 9–10 am के बीच छिड़काव करें ताकि उसे बीजों के चूसनेवाले कीटों से बचाया जा सके। ➢ बीजों के अकुरण के 21 दिन के बाद BIOFURY @ 1.5 ml/लीटर या FIPRONIL - 5% SC@ 2 ml/लीटर दिन के समय 9–10 बजे के बीच छिड़काव करने से इससे पत्ते संबंधी कीटों से बचाव होता है। ➢ ट्रांसप्लांटेशन के 50 से 60 दिनों के बाद छिड़काव Augusta @1.5ml/लीटर पानी, तो इससे फलों में छेद होने संबंधी बीमारी से बचाया जा सकता है। ➢ जल्दी और अच्छे विकास के लिए बीचड़ों पर 19:19:19 (पानी में घुलने वाला खाद) @1 gm/लीटर पानी का छिड़काव तथा बीजों के अंकुरन के बाद 10, 14 और 18 दिन के बाद इसका छिड़काव कारगर होता है। ➢ कीट एव बीमारियों से बचाने के लिए 10 दिन के अंतराल पर नीम टॉनिक और मैजिक टॉनिक का छिड़काव ट्रांसप्लांट के बाद कर सकते हैं।
19	फसल कटाई	➢ टमाटर को तोड़ने की प्रक्रिया उसके रोपने के 60–70 दिनों के बाद से शुरू की जाती है। ➢ बाजार की दूरी को ध्यान में रखकर टमाटर को कच्चा या पक्का तोड़ते हैं। ➢ अगर बाजार नजदीक है तो गहरे विकसित रंग होने पर तोड़ सकते हैं लेकिन अगर बाजार दूर है तो थोड़े कच्चे में ही तोड़ लेना बेहतर है।
20	उपज	➢ औसत उपज प्रति एकड़ में 200 क्विंटल तथा 0.05 एकड़ और 0.01 एकड़ में क्रमशः 10 क्विंटल तथा 2 क्विंटल होगी।

कर्ण भूमि कृषक प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड,
रामपुर भिखारी, सुभाष नगर, मुंगेर, बिहार-811201
संपर्क : 9693905959 / 8544304776
इ-मेल: karnbhumikrishak@gmail.com

कर्ण भूमि

कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

सब्जियों की जिम्मेदार खेती

जिम्मेदार खेती की शुरुआत - टमाटर

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
1.	पोषकत्व गुण	➢ इससे प्राप्त होती है सोडियम, पोटाशियम, ताबा, सल्फर, फास्फोरस, लोहा, मिनरल और कैल्शियम, विटामिन A, B, B2, C और निकोटिन एसिड।
2.	बीज चयन	➢ स्थानीय वातावरण मे जो सबसे अच्छा प्रदर्शन करे वैसे बीजो के किस्म को किसानो द्वारा चयन करना चाहिए। (अनिवार्य) जब हाईब्रिड का प्रयोग कर रहे हो तो प्रतिवर्ष विश्वसनीय स्थान से नए बीज का प्रयोग करना चाहिए जो 70% तक अंकुरित हो (अनिवार्य)।
3.	बीजों का उपचार	➢ हमेशा रोगानुमुक्त बीजो का प्रयोग करे ताकि रोगो से छुटकारा पाया जा सके। आजकल बाजार में कई कम्पनियो के उच्च उत्पादन वाले बीजों की भरमार है इसलिए पुराने बीजो का प्रयोग न करे। हमेशा ध्यान रखे कि उच्च प्रतिरोधक, उच्च पैदावार तथा अच्छे आकार वाले बीजो का प्रयोग करे। (अनिवार्य)
4.	मिट्टी	➢ यह सभी प्रकार की मिट्टी जहाँ की जलजमाव न हो वहाँ टमाटर उगाया जा सकता है। लेकिन बलुआही मिट्टी सबसे उपयुक्त है। इसमे अम्लीयता का मान (6–7) pH सबसे उपयुक्त होता है। ➢ चिकनी मिट्टी मे जैविकता की मात्रा अधिक होती है। परन्तु इसमे बलुवाई मिट्टी सबसे उपयुक्त है।
5.	जलवायु	➢ सबसे उपयुक्त मासिक तापक्रम टमाटर के लिए 21°C-23°C होना चाहिए। अत्यधिक बारिश हानिकारक है।
6.	बुआई का समय	➢ जून–जुलाई तथा अक्टूबर–नवम्बर
7.	बीज दर	➢ हाईब्रिड और उच्च उत्पादन के किस्म– 50ग्राम/एकड ➢ 2.5 ग्राम/0.05 एकड और 0.5 ग्राम/प्रति 0.01 एकड
8.	खेत की तैयारी	➢ पहले खेत को जोतते है। मिट्टी को पलटते हुए खेत जोतते है। इसे दो–तीन बार दोहराते है ताकि सारे खरपतवार नष्ट हो जाएँ।
9.	क्यारी तैयार करना	➢ टमाटर की खेती मे क्यारियाँ बनाने, मेड बनाने और नाली बनाने से पानी का निकास और सिचाई, छिडकाव और जडो के विकास के साथ–साथ पौधे के विकास मे सहयोग होता है। ➢ क्यारी तैयार करने का सही समय है जब बिचड़े 15 दिन पुराने और 5 दिन शेष रह गए हो उसे लगाने में। ➢ अत्यधिक मात्रा मे सिचाई का तरीका है कि क्यारियाँ 10–20 फीट लम्बी हो, दो फीट चौडा और 6 फीट मोटा। (अनिवार्य)
10.	बुआई	➢ टमाटर साधारणत: पुर्नरोपण किए जाते है क्योकि इससे अच्छा और बेहतर परिणाम होते है। जब यह नर्सरी मे उगाए जाते है।

क्रम	प्रयोग	प्रक्रम
		➢ कई तरह के विधि है जिसमे बीजो को नर्सरी मे उगाने के लिए लेकिन "उठी हुई क्यारियों" में उगाने का तरीका किसानो द्वारा अपनाया जा रहा है रसोई बगीचा की तर्ज पर क्योंकि इसमें खर्चा कम है। (अनिवार्य) ➢ नर्सरी के तैयार क्यारियो मे बीजो को बोया जाता है और उसकी देखभाल सिचाई खरपतवार की छटाई अच्छी तरह होनी चाहिए ताकि स्वस्थ बिचडे हो सके। ➢ बीज रोपन के तीन–चार सप्ताह तथा तीन स्थायी पत्तियाँ और 6–7 सेमी ऊँचा यह ट्रासप्लाट के लिए उत्तम है।
11.	खाली स्थान या दूरी	लाइन से लाइन 90 cm और पौधे से पौधे के बीच 45 cm
12.	जैविक खाद	➢ गोबर खाद 100 क्विटल/एकड ➢ 5 क्विटल/0.05 एकड और ➢ 1 क्विटल/0.01 एकड का उपयोग करे। (अनिवार्य)
13.	रासायनिक खाद	➢ 1 एकड खेत में पूर्नरोपण से पहले DAP - 60 kg, MOP - 40 kg और यूरिया– 30 kg प्रयोग करे तथा 0.01 एकड खेत मे 600 ग्राम DAP, 400 gm MOP और 300 gm यूरिया। ➢ ट्रासप्लाट के 30 दिन बाद एक एकड खेत मे MOP - 30 kg और यूरिया– 50 kg प्रयोग करे। तथा 0.01 एकड खेत मे 300gm MOP और 500 gm यूरिया। (अनिवार्य)
14.	सिचाई	➢ उपयुक्त मात्रा मे नमी मिट्टी मे हमेशा बरकरार रखनी होगी। 10–12 दिनों के अन्तराल मे लगातार हल्की सिचाई करनी होगी।
15.	अंतर कर्षण क्रियाए	➢ हवा के समुचित व्यवस्था के लिए 3–4 बार कोडाई 6 सप्ताह तक होनी चाहिए ताकि खरपतवार पर नियत्रण पाया जा सके। पहला 15 दिन पर, दूसरा 35 दिन पर तीसरा 55 दिन ट्रासप्लांटेशन के बाद। (अनिवार्य)
16.	सहारा देना	➢ फल मिट्टी के सम्पर्क मे आने से सड जाते है। 1 मीटर ऊँचा पेड की टहनी से पौधे को बाँध देने चाहिए। तार से भी बाँधकर पौधे को सहारा दिया जा सकता है।
17.	कीट एवं बीमारी	➢ टमाटर की खेती मे निम्नलिखित कीट एव बीमारियाँ देखी जाती है जैसे कि टोबैको कैटर पिलर, जसीड, फल छेदक कीडा, फलो का झडना, लेट ब्लाइट, पत्तियो का सिकुडना, बिल्टिंग, बैक्टेरियल कैन्कर, टमाटर पर धब्बे, पत्तियो मे अकड़न इत्यादि।
18.	पौधो की रक्षा के लिए	➢ बीज अकुरण से बिचडो के पूर्नरोपण तक निम्नलिखित पौधो की सुरक्षा के उपाए किये जा सकते है :– ➢ बीजों के अकुरण के 2–3 दिन के बाद छिड़काव करे कीटनाशक SWANNER (स्वानर) @1.5 gm/लीटर या Mancozeb 64% + Melataxyl - 8% @ 2 gm/लीटर दिन के समय करीब 9–10 am इससे पौधों का सड़ना रूकता है।

कर्ण भूमि
कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट)

खेत में उपयोग करने से होने वाले फायदे

- ★ केंचुए हानिकारक जीवाणुओं को खाकर लाभप्रद ह्यूमस में परिवर्तित कर देता है।
- ★ यदि 20 क्विंटल वर्मीकम्पोस्ट प्रति एकड़ किसी खेत में डालते हैं तो उससे लगभग 50 कि.ग्रा. नाइट्रेट (2 बोरी यूरिया के बराबर) 30 कि. ग्रा. फॉस्फेट (सिंगल सुपर फास्फेट की चार बोरी के बराबर) तथा 30 किलो पोटाश (एक बोरी म्यूरेट ऑफ पोटाश के बराबर) प्राप्त हो जाती है।
- ★ वर्मी कम्पोस्ट में कई प्रकार के एन्जाइम तथा हार्मोन पाए जाते हैं।
- ★ वर्मीकम्पोस्ट के इस्तेमाल से जमीन में सिंचाई की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता पड़ती है।
- ★ जमीन की जलधारा क्षमता में भी वृद्धि होती है।
- ★ भूमि के अम्लीय एवं क्षारीय प्रभाव (यदि हो तो) सुधारता है।

वर्मीकम्पोस्ट बनाने के लिए आवश्यक सामाग्री

(अ) उपयुक्त प्रजाति के केंचुए (ब) गोबर एवं कार्वनिक अवशेष (अधसड़ हरा चारा) गेंहू का भूसा, धान का पुआल, मक्का का डंठल आदि । (स) पानी (द) बाँस बल्ली व जाली । (य) जूट का बोरा या केले के पत्ता

वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन की प्रक्रिया

2mX1.5mX1m

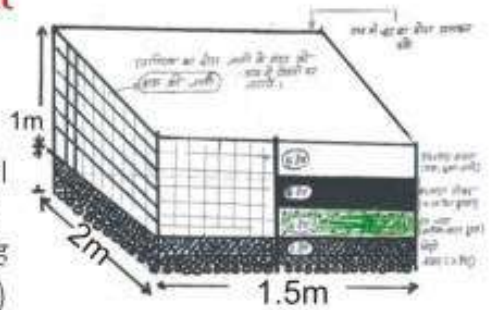

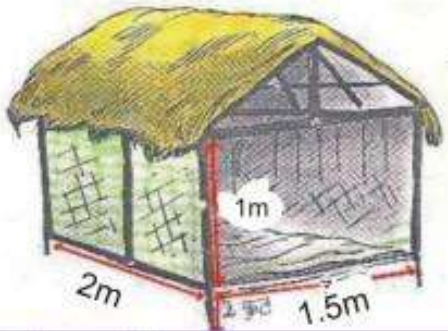

1. सर्वप्रथम उपयुक्त स्थान (छप्पर आदि) बना लेने के उपरान्त इसके नीचे 1.5 मीटर चौडा, 1.00 मीटर ऊँचा तथा 2.00 मीटर लम्बा बाँस की जाली के घेरा बनाकर पॉलीशीट से भीतरी तरफ बाँध कर जाली को ढ़क देते हैं।
2. इस बाँस की जाली के घेरा के तल को कंकड पत्थर या ईंट के टुकड़े आदि डालकर इसे थम्मस से अच्छी तरह मजबूत कर लें (इसे पक्का बनाने की आवश्यकता नहीं है)
3. इस जाली के घेरा में अधपके (15 दिन गोबर का घोल डालकर सड़ा हुआ) नमीयुक्त वनस्पति कचरे की छः ईंच की समान रूप की तह लगा दें।
4. इस वानस्पितिक कचरे की तह पर लगभग 6 से 8 ईंच पका हुआ गोबर (15 दिन गोबर का घोल डालकर सड़ा हुआ) समान रूप से फैलाऐं।
5. गोबर की तह के ऊपर 6 ईंच ऊँची बारीक अधसड़ा वानस्पतिक कचरे की तह समान रूप से फैला दें।
6. अब यह ढेर डोम आकार का हो जायेगा, जुट के बोरों या केले के पत्तों से ढक दें तथा इस पर नियमित रूप से (ठंडे के मौसम में दिन में एक बार तथा गर्मी के मौसम में दो बार) पानी का छिड़काव करते रहें।
7. इस गोबर की तह पर 100 केंचुए प्रति वर्गफीट के मान से डाल दें। उदाहरणार्थ 2X1 मीटर (2 वर्गमीटर या 21.5 वर्गफीट) के बेड पर 2152 केंचुओं की आवश्यकता होगी।
8. गड्ढे में डाले गए समस्त वानस्पतिक कचरे एवं गोबर को लगभग 30–35 दिन में हाथों से अथवा पंजे की सहायता से (फावड़ा अथवा गेती का इस्तेमाल किए बिना) धीरे–धीरे पलटते रहें। इससे गोबर से निकलने वाली गैस भी बाहर निकल जाऐगी, वायु का संचार भी ठीक होगा तथा गोबर का तापमान भी ठीक रहेगा।
9. उपरोक्त क्रियाऐं विधिवत कर लेने पर जब 50–60 दिनों उपरान्त ढेर पर से जूट के बोरे हटाए जाते हैं तो ढेर में चाय की पत्ती के समान केंचुओं द्वारा विर्सजित कास्टिंग की ढेरियाँ दिखाई देंगी।
10. अब 10–15 दिनों तक पानी का छिड़काव बंद कर दें तथा तैयार वर्मी कम्पोस्ट को बैड से बाहर निकाल कर पॉलीशीट पा ढेर लगा दें। दो तीन घंटे के उपरान्त केंचुए पॉलीशीट के फर्श पर नीचे चले जायेंगे। इस स्थिति में वर्मीकम्पोस्ट को अलग करके नीचे इकट्ठे हुए केचुओं को आगे वर्मी कम्पोस्ट को खाद बनाने में काम लिया जा सकता है।

पैदावार :-

इस विधि से मात्र 60–70 दिन में 2X1X0.5 मीटर की एक बैड से लगभग 2 से 3 क्विंटल अच्छी प्रकार पकी हुई वर्मीकम्पोस्ट तैयार हो जाती है तथा इसमें डाले गए 2100 केंचुए बढ़कर लगभग 6300 तक हो जाते हैं।

प्रमुख विशेषताऐं :

विवरण	गोबर की खाद	कम्पोस्ट खाद	वर्मीकम्पोस्ट
तैयार होने में लगने वाली अवधि	6 माह	4 माह	2 माह
पोषक तत्वों की मात्रा नाइट्रेट	0.3 से 0.5 %	1.1 से 1.5 %	1.2 से 1.8 %
फास्फोरस	0.25 से 0.6 %	0.5 से 0.9 %	1.5 से 1.8 %
पोटाश	0.4 से 0.5 %	1 %	1.2 से 2 %
लाभदायक जीवों की संख्या	बहुत कम मात्रा में	कम मात्रा में	काफी अधिक मात्रा में
प्रति एकड़ आवश्यकता	4 टन	4 टन	1 टन